'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ६४ } वाराणसी, शनिवार, ३० मई, १९५९ { पच्चीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन मुकेरिया (पंजाब) १६-५-'५९

दोस्ती और दुश्मनी, प्रेम और शस्त्र की शक्ति का मुकाबला है

[बिसर गयी सब तात पराई, जब ते साधु संगत मोहे भायी। ना कोई वैरी नाही बिगाना, सकल संग हमरी बन आयी ॥
जो प्रभु कीन्हा सो भल मान्यो, एक सुमति साधु तें पायी। सब में रम रहिया प्रभु एकै, पेखि पेखि नानक बिगसायी ॥
आरम्भ में कुछ विद्यार्थियों ने यह भजन गाया। उसके बाद विनोबाजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए जो संदेश दिया, वह यहाँ दिया जा रहा है। –सं०]

अभी हमने जो भजन सुना, वह यहाँ का लोकप्रिय भजन है। यह भजन कोई डरपोक शख्स नहीं बोल सकता। जिसकी छाती में धड़कन हो, वह इस भजन का उच्चारण नहीं कर सकता। जिसका हृदय मजबूत हो, फौलादी अन्तःकरण हो, सबको जीतने की कला हो, वही बहादुर इस भजन को गा सकता है। यह भजन सर्वोदय का मूलमन्त्र है।

आज की सामाजिक रचना का कुपरिणाम: रिश्वत

आज एक भाई कह रहे थे कि जिधर देखो, उधर रिश्वत का बाजार गरम है। शायद ही कोई शख्स हो, जो रिश्वत लेने से बचता हो। मैंने कहा, यह रोग सर्वत्र फैला हुआ है, यह सुनकर मुझे खुशी हुई। अगर मैं सुनता कि चंद लोग भ्रष्टाचार के शिकार हैं तो सोचने जैसी बात होती। मैं भी सोचता कि कुछ लोगों का हृदय बिगड़ गया है, उसे सुधारना होगा। लेकिन जब सब के सब इस रोग के शिकार हैं तो मैं मान लेता हूँ कि यह दिल की खराबी नहीं है। सब के दिल एक साथ खराब नहीं हो सकते। अगर ऐसा हो जाय तो हमें मान लेना चाहिए कि अब सृष्टि का संहार होनेवाला है। भगवान सृष्टि का संहार अभी करनेवाला नहीं है। इसलिए मैं निश्चयपूर्वक कहना चाहता हूँ कि सबके दिल बिगड़े हुए नहीं हैं। यह जो भ्रष्टाचार का रोग है, वह हमारे हालत की खराबी का परिणाम है, आर्थिक और सामाजिक रचना की खराबी का परिणाम है।

दुश्मनी और दोस्ती की निगाहें

सबके दिल में भगवान है। वह इस समाज-रचना से अलिप्त है। वह मूल में बहुत ऊँचा है। समाज-रचना बहुत तुच्छ है। उसे बदला जा सकता है। दिल में भगवान है तो हमें मानना चाहिए कि यह गलत समाज-रचना ज्यादे दिनों तक नहीं टिक सकती। अभी आपने जो भजन गाया, उसमें भी इसी बात का संकेत है। भजन में यह बताया गया है कि हमारे कोई दुश्मन नहीं हैं। अगर हम इस बात को स्वीकार कर लेते हैं तो सारी समाज-रचना बदल जायगी और सारी समस्याओं का भी निर्मूलन हो जायगा। उसके बाद जो हमसे दुश्मनी करेंगे, उन्हें भी हम जीत लेंगे। भारतीय संस्कृति की यह विशेषता है कि हम किसी की तरफ दुश्मनी की निगाहों से नहीं देखते। जो कोई हमारी तरफ दुश्मनी की निगाहों से देखता है, उसे भी हम दोस्त बना लेते हैं।

नहरी विवाद के हल के लिए एक सुझाव

पाकिस्तान बना, तब से हम तीन सौ करोड़ रुपया सेना पर खर्च कर रहे हैं। पाकिस्तान सौ करोड़ रुपया सेना पर खर्च कर रहा है। दोनों एक-दूसरे के डर से चार सौ करोड़ रुपया प्रतिवर्ष सेना पर खर्च कर रहे हैं। अब पानी का सवाल पैदा हुआ। यहाँ से पाकिस्तान को जो पानी मिलता है, वह सतत मिलता रहे तो हिन्दुस्तान को तकलीफ होगी। इसलिए हिन्दुस्तान ने अपनी नदियों को बाँधा है और अपने यहाँ पानी का उपयोग करने का तय किया है। उधर पाकिस्तान को भी अपने पानी की व्यवस्था करने की चिन्ता है। वह भी नहरें बनाने की व्यवस्था कर रहा है। इसलिए अभी इसी प्रश्न पर चर्चा चल रही है। एक सुझाव आया है कि पाकिस्तान में जो नहरें बनें, उनके लिए हिन्दुस्तान कुछ खर्चा दे और फिर पाकिस्तान को दिया जानेवाला पानी धीरे-धीरे देना बन्द कर दिया जाय, ताकि दोनों देशों के बीच में जो भेद खड़ा हुआ है, वह मिट जाय, मनमुटाव खत्म हो जाय। हिन्दुस्तान पाकिस्तान को उसके लिए कुछ खर्च देने को राजी भी हो गया है। लेकिन कितना खर्च दिया जाय, यही इस समय चर्चा का विषय है।

मेरे सामने सवाल यह है कि हम दोनों एक-दूसरे के डर से चार सौ करोड़ रुपया खर्च कर रहे हैं। उसके बदले हम पाकिस्तान की भलाई के लिए कुछ खर्च करें और पाकिस्तान हमारी भलाई के लिए कुछ खर्च करे तो दोनों में प्रेम हो जायगा

एवं चार सौ करोड़ रुपया भी बच जायगा। डर के वास्ते जो खर्च हो रहा है, वही अगर हम प्रेम के लिए कर दें तो नुकसान क्या है? मेरे सुझाव पर कुछ गौर किया जाय तो मुझे उम्मीद है कि समझौते का एक रास्ता निकल आयेगा। फिर सिन्धु नदी का पानी राजस्थान को दिया जा सकेगा और सतलज का पानी पाकिस्तान को मिल सकेगा।

प्रेम आक्रामक होता है

पानी के मसले हिन्दुस्तान के अन्दर भी पैदा हो सकते हैं। इस देश में कई नदियाँ हैं। वे एक सूबे से दूसरे सूबे में जाती हैं। मध्य-प्रदेश से गुजरात में जानेवाली नदी का पानी कल अगर मध्य-प्रदेश रोक लेगा तो क्या फिर वही सवाल पैदा नहीं हो जायगा? इसलिए मैं चाहता हूँ कि ऐसे सवालों का निपटारा हम प्रेम से कर लें। प्रेम के लिए जितना भी खर्च करें, उससे दुश्मनी कम होगी। डर से खर्च करने के बजाय प्रेम से खर्च करने में कोई नुकसान नहीं है।

लोग कहते हैं कि सारे मसले प्रेम से हल किये जायँ, यह तो ठीक है, लेकिन प्रेम दोनों बाजू से होना चाहिए। हम कहना चाहते हैं कि दूसरी ओर से आपको प्रेम मिले या न मिले तो भी कोई हर्ज नहीं। आपका प्रेम सामनेवाले पर हमला कर सकता है। प्रेम आक्रामक होता है। उससे प्रतिपक्षी को जीता जा सकता है। लड़ाई में मजबूत पक्ष दूसरे पर हमला करता है और वह जीतता है। इसी तरह प्रेम का भी एक मजबूत पक्ष है, वह दूसरे पर हमला करेगा और निश्चय ही जीतेगा। हम इस बात को अच्छी तरह समझ लें, तभी "बिसर गया सब तात पराई" होगा।

हमें अपनी-पराई बात भूलनी है। यह बात व्यक्तिगत साधना करनेवाले व्यक्तियों के लिए ही नहीं, बल्कि देश के लिए है, संसार के लिए है। अगर इस बात पर हम लोग अमल नहीं कर सके तो आपस में झगड़ा चलेगा और उसका परिणाम होगा—मानव-जाति का खात्मा!

शस्त्र की ताकत व प्रेम की ताकत

अब, जब कि आणविक शस्त्र बन चुके हैं, हमारे पास उन्हें मात देनेवाली शक्ति होनी चाहिए। वह शक्ति प्रेम में है। सिखों ने मन्त्र दिया है "निर्भय, निर्वैर"। निर्भय यानी हम किसी से डरते नहीं और निर्वैर यानी हम किसी को डराते भी नहीं। वैर और डर छोड़कर हम प्रेम की ताकत बना सकते हैं। फिर आणविक शस्त्रों का मुकाबला हो सकता है। इन दिनों छोटे-छोटे राष्ट्र शस्त्रास्त्रों के बल पर नहीं टिक सकते। उनके टिकने का एक ही रास्ता है कि वे अपने प्रेम और निर्भयता की ताकत महसूस करें।

"ना कोई बैरी ना ही बिगाना" यही सर्वोदय का संदेश है। मैंने कई बार कहा है कि गुरुवाणी याने सर्वोदय-साहित्य। इस साहित्य का घर-घर में अध्ययन होना चाहिए। हम कोई भेद नहीं मानते, सभी एक जमात है, परमेश्वर एक है, उसकी भक्ति करनी चाहिए, हरि-नाम जपना चाहिए, सत्संग करना चाहिए, बाँटकर खाना चाहिए—ऐसी-ऐसी जितनी भी बातें हैं, वे सब मिलकर सर्वोदय होता है, जो गुरुवाणी में कही गयी हैं। हम चाहते हैं कि पंजाब में "ना कोई बैरी ना ही बिगाना" यह मन्त्र घर-घर में चले, और घर-घर में सर्वोदय-पात्र में डाली गयी मुट्ठी के रूप में प्रगट हो।

•••

प्रार्थना-प्रवचन जसूहा (पंजाब) १५-५-'५९

लोकशाही को नये रूप में भारत में लाना होगा, यह तभी संभव है, जब हमारी एक जमात होगी

आज एक भाई ने दान की एक योजना हमारे सामने रखी। उन्होंने कहा कि हमारे पास जमीन है, उसमें हम अच्छी तरह से पैदा करते हैं, चार हजार रुपये की फसल आती है। हम वह जमीन भूमिहीनों के वास्ते दान देने को राजी हैं। वे उसमें से चार गुना पैदा करें। जिसमें से चार हजार हमें मिले और बाकी का १२ हजार दूसरों को मिले। हमने उनसे कहा कि आपकी योजना में एक नुक्स रह गया है। आप दान देना चाहते हैं, यह ठीक ही है, परन्तु यह कहिये कि हमारी जमीन में जो १६ हजार की फसल पैदा होगी, उसमें से आठ हजार हमें मिले और आठ हजार दूसरों को मिले। आपने दान दिया है, इसलिए स्वर्ग में आपके वास्ते सीट रिजर्व हो जाय तो वह दान का बेहतर तरीका होगा।

परिवार की नई व्यवस्था

इन्सान अपने परिवार के लिए किस तरह सोचता है! क्या विज्ञान के जमाने में अलग-अलग परिवार टिक सकेंगे? जरा ध्यान दीजिये कि तिब्बत में क्या हो रहा है? पाकिस्तान में, अफ्रिका में, फ्रान्स में, क्या हो रहा है? जगह-जगह कशमकश है। लोगों में असन्तोष, असमाधान है। ताकतें टकरा रही हैं। कहीं भी शान्ति, चैन, आनन्द और दिल को तसल्ली नहीं है। इस हालत में हम अगर ऐसे भ्रम में रहें कि हमारे आज के विचार जैसे के तैसे कायम रहेंगे और दुनिया में तरक्की होगी तो वह होनेवाली नहीं है। हमें अपने जीवन को, विचार को, रवैये को बदलना होगा, तभी दुनिया में शांति होगी। नहीं तो आगे चलकर हमारे परिवार नहीं टिकेंगे। लाठीवाला, पिस्तौलवाला जमाना चला गया, अब मिलजुलकर काम करने का जमाना आया है, छोटे पैमाने पर नहीं, बड़े पैमाने पर काम करने का जमाना आया है। इस हालत में अगर हम टिकना चाहते हैं, हिन्दुस्तान के विचार को कायम रखना चाहते हैं तो हमें करुणा के ढंग से व्यापक बनना होगा। उत्पादन बढ़े, तब भी और उत्पादन घटे, तब भी उसकी पर्वाह किये बिना हमें हिम्मत से एक होकर काम करना होगा, तभी हमारे गाँव टिक सकेंगे। हम पर विज्ञान का जोरों से हमला हो रहा है। अगर हम विज्ञान के इस चैलेंज को स्वीकार नहीं करेंगे तो गये-बीते साबित होंगे।

लोकशाही में शासक सेवक होता है

पुराने जमाने में राजा-महाराजाओं का राज्य चलता था।

एक राजा मरता था तो उसका लड़का गद्दी पर बैठता था। राजा अच्छा हो तो प्रजा सुखी होती थी और खराब हुआ तो दुःखी। प्रजा का सुखी या दुःखी होना एक मनुष्य की अक्ल पर निर्भर रहता था। इस पुरानी व्यवस्था को गलत समझकर हमने लोकशाही का विचार मान्य किया। अब अंग्रेजों तथा मुगलों की हुकूमत गयी और कांग्रेस की आयी, ऐसी बात नहीं है। अब जनता की, आपकी हुकूमत आयी है। आपने वोट देकर चंद लोगों को पाँच साल के लिए नौकरी पर रखा है। अगर उनके काम से आपकी तरक्की होगी तो आप उन्हें दुबारा नौकरी पर रखेंगे। अगर उन्होंने ठीक काम न किया हो तो आप दूसरे नौकर चुन सकते हैं। आप इस बात को ध्यान में रखिये कि आप मालिक हैं और वे नौकर हैं। मुख्य मंत्री, प्रधान मंत्री, राष्ट्रपति भी आपके मालिक नहीं हैं। वे हुकूमत नहीं चलायेंगे। हुकूमत आपकी है। वे कुछ भी करेंगे तो आपके नाम पर करेंगे, गोली चलायेंगे तो भी आपके नाम पर चलायेंगे। आप मालिक हैं, आपकी तरफ से उन्हें नौकरी पर रखा गया है, ऐसा दावा वे करेंगे।

मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि आपका मुख्य मंत्री आपके गाँव में आये तो क्या आप उन्हें नौकर समझते हैं या उनके सामने 'जी हाँ, हाँ जी' करते हैं? मुख्य मंत्री की तो बात ही छोड़ दीजिये, लेकिन मामूली सिपाही भी गाँव में आये तो आप उससे डरते हैं। वह सिपाही तो आपके नौकर के नौकर के नौकर का नौकर है। मुख्य मंत्री आये तो आप उनका ऐसा स्वागत करेंगे, जैसे महाराजा पटियाला का या औरंगजेब का करेंगे। तब फिर आपकी हुकूमत कैसे चलेगी?

जनता अपने अधिकार पहचाने

मुख्य मंत्री आपमें से किसी एक का नौकर नहीं है, सब का नौकर है। इसका मतलब यह है कि आपके हाथ में ताकत है, बशर्ते कि आप सब एक हों। आप अलग-अलग रहेंगे तो जिन्हें आपने नौकरी पर रखा है, वे नौकर नहीं रहेंगे, मालिक बन जायेंगे। आप क्या चाहते हैं? वे बादशाह बनें या आप बादशाह बनें? अगर आप चाहते हैं कि मुख्य मंत्री, कलेक्टर आदि सारे बादशाह बनें तो आपका आज का रवैया कायम रखिये। लेकिन अगर आप चाहते हैं कि वे नौकर बनें और आप उनसे नौकर की हैसियत से काम लें तो आपको इकट्ठा होना चाहिए। यहाँ पर कहावत है 'इकट्ठ लोहे की लट्ठ'। अगर आप इकट्ठा नहीं होंगे तो आपके हाथ में लोहे की लट्ठ तो है ही नहीं, लेकिन मामूली लट्ठ भी नहीं आयेगी। लोकशाही में लोगों की हुकूमत चलेगी। आप इस बात को समझ लीजिये कि आप में से किसी एक की नहीं चलेगी, सबकी चलेगी। आप में से किसी एक को मालिक नहीं बनाया गया है, जमात को मालिक बनाया गया है।

मालिक स्वयं गुलाम

आप लोग एक नहीं होते हैं, अलग-अलग रहते हैं तो गुलाम ही बनते हैं। आज हिन्दुस्तान के लोग गुलाम हैं, अपने नौकर के गुलाम हैं। एक मालिक था, उसे प्यास लगी तो नौकर के नाम से चिल्लाने लगा। नौकर ने कहा 'जी हाँ, आता हूँ।' वह काफी देर तक नहीं आया। मालिक खुद उठकर तो अपने हाथ-पाँव इस्तेमाल कर नहीं सकता था, क्योंकि मालिक जो था! इसलिए प्यासा पड़ा रहा। अगर वह खुद उठे और ढूँढकर पानी लाये तो मालिक कैसा? जब एक घंटे बाद नौकर आया, तब उसे पानी मिला। इस तरह वह मालिक अपने नौकर का गुलाम बना हुआ था। अभी आप लोगों की हालत वैसी ही है।

आज लोकशाही का नाम तो चल रहा है, परन्तु वास्तव में जिन्हें आपने नौकर चुना था, वे ही मालिक बन बैठे और आप गुलाम बन गये हैं। आपके मुख्य मन्त्री पर आप में से किसी एक व्यक्ति की हुकूमत नहीं चलनेवाली है, उस पर हुकूमत चलेगी तो जमात की चलेगी। आप जमात नहीं बनेंगे तो सरकार शेर बनेगी और आप बन जायेंगे बकरी। एक व्यक्ति के तौर पर आपकी कोई हैसियत नहीं है।

सब कुछ सरकार के चंगुल में

आज वेलफेयर स्टेट के नाम पर हमने सरकार के हाथ में सारी सत्ता सौंप दी है। आपके बच्चों की तालीम, जमीन के कानून, लड़कों की शादियाँ, उद्योग, व्यापार, व्यवहार आदि सब सरकार के हाथ में हैं। याने आपके कुल जीवन में सरकार का दखल होगा। आपके जीवन का एक भी पहलू ऐसा नहीं रहेगा, जिस पर सरकार की पकड़ न हो। आज विज्ञान के कारण सरकार के हाथ में जो साधन आ गये हैं, उनसे वर्तमान सरकार की हमारे जीवन पर जो पकड़ है, उतनी पकड़ औरंगजेब की भी नहीं थी। वह हुक्म करता था तो किसी सरदार के पास उसका हुक्म पहुँचने में ही दो-चार महीने लग जाते थे, फिर सरदार उस पर अमल करने न करने में ही समय लगा देता था। लेकिन आज तो सरकार का हुक्म कुछ मिन्टों में सारे देशभर में पहुँच जाता है और एकाध घण्टे में उस पर अमल भी हो जाता है। इस प्रकार विज्ञान के जमाने में आपने वेलफेयर स्टेट के नाम पर सरकार के हाथ में ऐसी सत्ता सौंपी है कि वह आपके जीवन को पूरी तरह कस सकती है। आपकी कोई आजादी नहीं रह सकती।

कल एक भाई कह रहे थे कि हम प्राइवेट स्कूल चलाते हैं, लेकिन इन दिनों सरकार ने अपने स्कूलों में फीस माफ कर दी है। इससे अब हमारे पास लड़के कैसे आयेंगे? हमने उनसे कहा कि आपके स्कूल चल ही नहीं सकते। अगर वे टिकेंगे तो सरकार की दया पर टिकेंगे। इसका मतलब यह है कि आज चारों ओर सरकार की पकड़ है।

धार्मिक सम्पत्ति पर सरकारी अधिकार

इधर कुछ लोग कहते हैं कि धर्म के मामले में सरकार का दखल न हो। सरकार कहती है कि हम धर्म के मामले में कतई दखल नहीं देंगे, क्योंकि हम उसे मानते ही नहीं। हम आपकी तरफ नागरिक के नाते ही देखना चाहते हैं, आप सिख हैं, मुसलमान या हिन्दू। नमाज पढ़ते हैं, संध्या करते हैं या जपजी का पाठ करते हैं, इससे हमें कोई ताल्लुक नहीं है। लेकिन जहाँ पैसा इकट्ठा होता है, वैसे स्थानों से हमें ताल्लुक है। मन्दिर, गुरुद्वारों आदि में पैसा इकट्ठा होता है तो सरकार का उसमें दखल होगा ही। फिर सरकार के कानून वहाँ आयेंगे। आप चाहे जो करें, उन्हें रोक नहीं सकते। अन्य मामलों में आप चाहे घुटने टेककर प्रार्थना करें या मस्तक टेककर, सरकार का उससे कोई मतलब नहीं होगा।

लोकशाही में लोगों के हाथ में सत्ता रहेगी—बशर्ते कि लोगों की एक जमात हो। अगर जमात न हो तो लोकशाही पुराने राजाओं के राज्य से भी बदतर होगी। क्या कभी पुराने राजा

शादी के कानून बना सकते थे ? आज की सरकार यह सब कर सकती है। अल्ला मियाँ का जो वर्णन है कि वह हर बात पर कादिर है, वह सरकार पर लागू होता है। परमेश्वर का यह वर्णन आज की सरकार का वर्णन है। आपने वोट देकर सरकार के हाथ में इतनी ताकत दे रखी है कि वह आपको सब तरफ से कस सकती है। पुराने राजाओं के हाथ में ऐसी ताकत नहीं थी; अतः वे डरते थे, लेकिन आज की सरकार नहीं डरती।

यह भयानक लोकशाही

अब आप के सामने मसला पेश है कि लोकशाही में आप गुलाम बनना चाहते हैं या हुकूमत चलाना चाहते हैं ? गुलाम बनना चाहते हैं तो अब जैसे अलग-अलग रहें, फिर सरकार आपको कस लेगी। फिर मृत्युकर आदि जो भी लगाये, आप उस पर रोइयें मत। लेकिन आप सरकार को नौकर की हैसियत से रखना चाहते हैं तो आपको एक जमात बनना पड़ेगा। आजकल अमृतवेला में भी सरकार का नाम चलता है। हरकोई कहता है सरकार यह करे यह न करे। बड़े-बड़े विद्वान भी अपने को लाचार समझते हैं। क्या विद्वान देश को तालीम नहीं दे सकते ? विद्वानों की सत्ता अगर कहीं चलेगी तो तालीम पर ही चलेगी। लेकिन आज वे भी समझते हैं कि तालीम तो सरकार ही देगी। क्योंकि तालीम का महकमा सरकार को सौंपा गया है। सरकार जो पाठ्यपुस्तकें मुकर्रर करेगी, वे कितनी भी रद्दी क्यों न हों, लेकिन कुल बच्चों को उनका अध्ययन, चिंतन मनन, रटन करना पड़ेगा। उस परीक्षा में पास होना पड़ेगा, तभी नौकरी मिलेगी। यह कितनी भयानक गुलामी है कि अपने देश में, गाँव में, घर में अपनी न चले। अपने बच्चों की तालीम में, शादियों में, व्यापार-व्यवहार में भी अपनी न चले। इस नाममात्र की लोकशाही से सारी सत्ता सरकार के हाथों सौंपी जाती है। तो क्या ऐसी भयानक लोकशाही सहन करने लायक है ?

जनशक्ति का विचार

मैं जो आन्दोलन लेकर आया हूँ, उसके बिना यह गुलामी मिटनेवाली नहीं है। इसलिए गाँव गाँव के लोगों को समझना चाहिए कि हमें एक जमात बनना है। अपने गाँव की ही चीजें इस्तेमाल करनी हैं। हमें ग्रामसंकल्प करके ग्रामोद्योग बढ़ाने चाहिए और गाँव की तालीम अपने हाथ में लेनी चाहिए। फिर आप सरकार से मदद माँगेंगे तो मदद देना सरकार का फर्ज होगा। क्योंकि वह आपसे लगान लेती है। इस तरह आप की बुलन्द आवाज निकलेगी तो सरकार नौकर बनेगी। हम जो ग्रामदान की बात कहते हैं, वह सिर्फ जमीन तक ही सीमित नहीं है। वह तो आपके जीवन में सच्ची लोकशाही लाने की बात है। इस बात को आप समझ लेते हैं तो इस आन्दोलन की असलियत आपके ध्यान में आ जायगी। ग्रामदान में सिर्फ ऐसा विचार नहीं है कि गरीबों को थोड़ी जमीन मिले, फिर उसमें फसल बढ़े, वह फसल वे भी लें, हमें भी दें और स्वर्ग में हमारे लिए जगह बनी रहे। यह तो जनता की ताकत बढ़ाने का विचार है।

चुनाव का सही विवेक

हम चाहते हैं कि इस विचार की मंजूरी के तौर पर हर घर में सर्वोदय-पात्र रखा जाय। १०० में से ५९ घरों में रखा गया, वह काफी नहीं है। सौ के सौ घरों में रखा जाना चाहिए। वह प्रेम से दिया हुआ टैक्स है। अगर कुल लोग वह संकल्प कर लेते हैं तो उनका संकल्प बल बनता है। हम सब एक हो जायँ, इकट्ठा हो जायँ तो लोहे का लट्ठ बनेगा। फिर आपकी स्टेट सर्वोदय स्टेट बनना लाजमी है, नहीं तो आज की तरह भिन्न-भिन्न पक्षों के लोग आपके पास आकर कहेंगे कि हमें चुनोगे तो हम आपको जन्नत में ले जायेंगे। दूसरे पक्षवालों को चुनोगे तो वे आपको जहन्नुम में ले जाएँगे।

आज एक कांग्रेसी भाई हमारे पास किसी दूसरे कांग्रेसी भाई की शिकायत कर रहे थे। हमने उनसे पूछा कि वह ठीक काम नहीं करता है, इसलिए आप उससे नाराज हैं। क्या वह फिर से खड़ा होगा तो आप उसे वोट देंगे ? उन्होंने जवाब दिया कि अगर कांग्रेस के नाम पर खड़ा होगा तो वोट देना लाजमी है, हम लाचार हैं। धिक्कार है इस गुलामी को ! कांग्रेस के नाम से जहर की पुड़िया लेनी हो तो क्या अमृत समझकर ले लेंगे ? क्या इस तरह आप अपनी अक्ल दूसरे को सौंप सकते हैं ? फिर वोट के माने क्या हैं ? चाहे कांग्रेस ने खड़ा किया हो या दूसरी किसी पार्टी ने खड़ा किया हो, वह शख्स ठीक है या बेठीक—यह देखना आपका काम है। अगर वह नहीं देखते हैं और किसी भी पार्टी के नाम पर किसी शख्स को वोट देते हैं तो उसका मतलब यह हुआ कि आपने वोट का हक खोया। यह सारा विवेक लोगों को सिखाना होगा। उन्हें यह बात समझानी होगी कि लोकशाही में लोग मालिक हैं, बशर्ते कि वे एक जमात हों। जमात न हों तो वे गुलाम बने रहेंगे। इस दृष्टि से आप ग्रामदान की तरफ देखोगे तो आपको नया दर्शन होगा।

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

मालपरा (गोहिलवाड़) १३-११-'५८

लोक-शक्ति का निर्माण करने से ही आजादी का वास्तविक लाभ प्राप्त होगा

स्वातन्त्र्य का अनुभव

अपना शरीर स्वस्थ होने का अनुभव खुद अपने को ही होता है। उसके लिए डाक्टर के सर्टिफिकेट की जरूरत नहीं होती। पेटभर भोजन किये हुए व्यक्ति को किसी से यह पूछना नहीं पड़ता कि मैंने भोजन किया या नहीं। मानव को गाढ़ निद्रा आती है तो उसका सुख प्रत्यक्ष अनुभव में आता है। फिर भले ही कोई उसे माने या न माने। वह स्वानुभव, आत्मानुभव की बात ही जाती है।

इसी तरह स्वराज्य का अनुभव भी हरएक को होना चाहिए। लेकिन आज समाज में ऐसा दिखायी नहीं पड़ता। इसके विपरीत यही दीख रहा है कि सभी सारा बोझ सरकार पर डाल हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं। वे समझते हैं कि हमारे लिए सब कुछ सरकार को करना चाहिए। अगर वह नहीं कर पाती तो हम उसे भला-बुरा कहें, इतना ही हमारा काम रह गया है। हमें यह अनुभव ही नहीं होता कि हम स्वतंत्र हैं। वास्तव में जिसे स्वराज्य का अनुभव होगा, उसमें आत्म-विश्वास रहेगा। ऐसा

आत्म-विश्वास प्रजा में दिखायी नहीं पड़ता। हमें यह नहीं लगता कि हम स्वतंत्र रूप से कुछ कर सकते हैं। अपने में वैसी शक्ति होने का अनुभव ही नहीं करते।

स्वातन्त्र्य-प्राप्ति के बाद प्रेरणा का अभाव

अंग्रेजों के राज्य में जितनी परतन्त्रता थी, आज हम लोगों में उससे भी अधिक परतन्त्रता पायी जाती है। क्योंकि उस समय ऐसा नहीं लगता था कि अंग्रेज जनता के लिए कुछ करेंगे। इसीलिए जनता के बीच से लोग सेवा के लिए आगे आते थे। उन दिनों राष्ट्रीय शालाएँ चलती थीं और बच्चे भी कहते थे कि हम लोग राष्ट्रीय शालाओं में जायेंगे, दूसरी शालाओं में नहीं जायेंगे। उस समय खादी भी स्वतन्त्र रूप से खड़ी की गयी थी। सरकार की नाराजगी उठाकर भी खादी चलाने की हिम्मत लोगों में थी। ग्राम-उद्योग और अस्पृश्यता-निवारण के लिए भी स्वतन्त्र उद्योग हुए। अंग्रेजी सरकार उसमें बाधा डालती, फिर भी लोग अपने प्रयत्न से विरत न होते थे। इसी तरह शराबबन्दी के लिए पिकेटिंग करते थे। गांधी-इरविन समझौते के बाद गांधीजी ने अपनी लड़ाई के सभी अंग वापस ले लिये, पर शराब की पिकेटिंग यह कहकर जारी रखी थी कि यह एक नैतिक कार्यक्रम है। ईसाई होने के कारण इरविन ने उसके लिए सम्मति भी दी थी। किन्तु आज उनके इस आग्रहपूर्ण कार्यक्रम की क्या स्थिति है? बम्बई सरकार ने अच्छा कानून बनाया, पर जनता उस पर अमल करे, उसके लिए उसने आवश्यक प्रचार आदि के लिए क्या किया है? बम्बई से बाहर की बात करें तो अन्यत्र कहीं इस बारे में कुछ नहीं हुआ। इसका अर्थ यह है कि लोक-तन्त्र की जो स्वतन्त्र प्रेरणा थी, उसे हम आज स्वराज्य के बाद खो बैठे हैं।

सरकारी अधीनता का यह दुष्चक्र

क्या हम इसी स्थिति को स्वराज्य कहें? कई बार ऐसा लगता है कि १५ अगस्त, जो भारत की स्वतन्त्रता का आरंभ-दिन है, कहीं भारत की परतन्त्रता का आरंभ-दिन तो नहीं है? आज जनता निद्रा में इतनी डूबी पड़ी है कि उसने धार्मिक, राजनैतिक और सामाजिक सेवा आदि सभी महत्त्व के काम प्रतिनिधियों को सौंप दिये हैं। जैसे हमारे यहाँ धर्मकार्य में पत्नी पति के हाथ को अपना हाथ लगा दे तो उसके लिए फिर स्वतन्त्र कुछ कर्तव्य नहीं रहता, वैसे ही असेम्बली में भी हाथ उठा देने से कृतकृत्यता मान ली जाती है। प्रतिनिधि भले ही चर्चा के समय उपस्थित न रहें, प्रस्ताव के समय आकर हाथ उठा दें तो काम चल जाता है। इस तरह लोगों के हाथ में विशेष जवाबदारी क्या रही? सब तो उन्होंने प्रतिनिधियों को सौंप दिया और स्वयं पुरुषार्थहीन जीवन बिता रहे हैं। कालिदास ने 'रघुवंश' में लिखा है दिलीप प्रजा का भरण-पोषण, शिक्षणादि सब कुछ करता था, इसलिए वही उनका माता-पिता था। वास्तविक माता-पिता तो केवल उन्हें जन्म देने-भर के थे। राजा के पास ऐसी किसी मशीन का आविष्कार नहीं हुआ, जो उन्हें जन्म भी दिला दे, इसीलिए इतनी विवशता थी। मैं तो यह श्लोक पढ़कर घबरा उठता हूँ। सब कुछ सरकार के ही अधीन हो तो हम लोग यंत्र ही बन जायेंगे।

सुख के साथ गुण भी

हम सब कुछ सरकार पर छोड़ दें और सरकार सारी प्रजा के कल्याण का दावा करे तो उसका पूरा कल्याण हो जायगा, ऐसा नहीं कहा जा सकता। सुख के साथ गुण-विकास हो, तभी कल्याण हो सकता है। सुख आये और गुण घट जायँ तो वह अवनति का साधन कहा जायगा। इसलिए जिस तरह जनता के गुण बढ़ें, उसी तरह सुख की वृद्धि होनी चाहिए। अगर सुख की योजना के साथ गुण-विकास की योजना न रहे तो वैसी सुख-वृद्धि देश के लिए अत्यन्त अकल्याणकारी सिद्ध होगी। फिर गुण-विकास का काम सरकार नहीं कर सकेगी। सरकार भौतिक विकास कर सकती है, पर त्यागवृत्ति और परस्पर सहकार के काम जनता की ओर से ही होने चाहिए।

आज हम यह शक्ति खो बैठे हैं। इस समय कदाचित् ही कोई ऐसी शिक्षण-संस्था हो, जो स्वतन्त्र काम करती हो। खादी की बात लें तो उसमें भी यही स्थिति है। कहा जाता है कि आज की सरकार खादी को मदद देती है। लेकिन इस मदद को पाकर खादी पहले से कितनी विकसित हुई, यह देखने की बात है। वास्तव में आज खादी को बेकारी-निवारण का एक अंग मान-कर सहायता दी जाती है। उसके साथ ही मिलों का भी कारो-बार चलता है। इस तरह की मदद तो कोई भी सरकार दे सकती है, कांग्रेस-सरकार कुछ उदारता करेगी, इतना ही अन्तर है। फिर ऐसी मदद मिलने पर भी जब १२ हजार की आबादी में ५०० लोग खादीधारी होते हैं और वही उसकी प्रगति मानी जाती है तो सारे देश की आबादी को देखते हुए खादी के विकास में कितना समय लगेगा, यह गणित करके ही देखिये। अतः स्पष्ट है कि इन सबके लिए स्वतन्त्र जनशक्ति को ही खड़ा करना होगा।

स्वतंत्र जनशक्ति ही स्वराज्य का मूल है

जब सब लोग आन्दोलन करते थे, तब भी मैं चुपचाप बैठ-कर रचनात्मक कार्य करता रहा। ३०-३० वर्षों तक मैंने वह काम किया है। फिर भी आज वृद्धावस्था में इसलिए निकल पड़ा हूँ कि स्वतन्त्र जनशक्ति खड़ी हो जाय। अगर हम स्वतंत्र जन-शक्ति खड़ी न कर सके तो हमें अपने दावे छोड़ देने होंगे। खादी का दावा है कि जिस तरह हर आदमी अपना अनाज पैदाकर स्वावलंबी बने, वैसे ही कपड़े के बारे में भी स्वावलंबी बन जाय। खेती, ग्राम-उद्योग और खादी तीनों मिलकर ही ग्राम-स्वराज्य की स्थापना हो सकती है। यही खादी का दावा है। क्या इस तरह खादी चल रही है? अतः इतना ही मानकर सन्तोष कर लेना ठीक नहीं कि हमारे तालुके में खादी का काम अच्छा हो रहा है, बल्कि आप लोगों को स्वतंत्र जनशक्ति खड़ी करने के लिए समय देना चाहिए।

शान्तिसेना की पूर्वभूमिका

भावनगर के एक भाई कह रहे थे कि हमारे नगर में किसी तरह की अशान्ति नहीं है तो फिर हमें शांतिसेना की क्या जरूरत है? लेकिन मैं पूछता हूँ कि क्या प्यास लगने पर ही कुआँ खोदा जाय? देश के किसी कार्य के लिए अलग-अलग पक्ष-वाले सहकार करें, यह माना जाता है। किन्तु क्या यह कहना ठीक होगा कि देश पर संकट आने पर ही एकता की जाय? वास्तव में एकता स्वयमेव गुण है। संकट आने के बाद ही एकता का आवाहन करें तो बहुत देर हो जायगी। शान्ति के समय भेद रखना और संकट के समय एकता की बात करना सरकार की शक्ति की पूर्ति करना नहीं, उसकी शक्ति के टुकड़े करना ही कहा जायगा।

सरकारी मदद और आलस्य

यदि हम स्वतन्त्र काम नहीं करते और केवल सरकार की

ही मदद लेते हैं तो सरकार की शक्ति की पूर्ति नहीं करते। फिर सरकार मदद करने के लिए तैयार होती है तो आलसी लोग उसी को चाहने लगते हैं। खुद कुछ काम नहीं करते।

एक कार्यकर्ता ने एक गाँव में दस वर्ष तक खूब काम किया, अच्छा काम किया। बाद में उसे सरकार मदद देने के लिए तैयार हुई। फिर तो गाँव के लोगों को जो भी मदद अपेक्षित होती, वे आकर उसीसे माँग करने लगते। फिर गाँव के लोगों से मदद पाने की बात तो दूर रही, वह कार्यकर्ता सरकार की ओर से मदद दिलानेवाले के रूप में जाहिर हो गया। वह लोगों से कहता कि 'आप इतनी मदद करें' तो वे कहते : आप ही मदद दिलाइये। आखिर उस बेचारे को गाँव छोड़कर चला जाना पड़ा। इसी तरह आलसी को सरकारी मदद मिल जाय तो वह सवाया आलसी हो जाता है। कम्युनिटी प्रोजेक्ट का वरदान भी लोगों के सिर पर बारिश की तरह बरस पड़ा है। प्रोजेक्ट के लोग अस्पताल खुलवा दें, कुएँ खुदवा दें तथा पाँच-सात साल तक मदद देते रहें और बाद में समेट लें तो अस्पताल बन्द करने का कलंक गाँववालों पर लगेगा। कहने का आशय यह है कि जब तक जनता का उत्थान जन-शक्ति से नहीं होता, तब तक ऊपर की बारिश किसी काम को नहीं है। भले ही ऊपर से अच्छी बारिश हो, पर यदि हम खेत जोते-बोयेंगे नहीं तो अनाज कहाँ से पैदा होगा? स्वराज्य पाने का अर्थ इतना ही है कि दूसरे के अधीन जो खेत था, वह हमारे हाथ आ गया। अब यदि हम उसे जोते-बोयेंगे नहीं, परिश्रम न करेंगे तो सुख कैसे मिलेगा? स्वराज्य आने का अर्थ भोग भोगना नहीं, बल्कि स्वराज्य के बाद मिलकर लोक-शक्ति से मजबूत काम करना है। खेद है कि हम लोग यह बात भूल गये हैं।

ग्रामस्वातंत्र्य का पन्थ

आप अपना रक्षण स्वयं कैसे कर सकते हैं, एक-एक गाँव को किस तरह स्वतंत्र कर सकते हैं, इसका एकमात्र मार्ग ग्रामदान है, इसके सिवाय दूसरा कोई मार्ग नहीं है। ग्रामदान के बिना भी ग्राम-स्वराज्य हो सकता हो तो मैं अपना यह ग्रामदान-आन्दोलन वापस भी ले सकता हूँ। लेकिन अभी तक मुझे ऐसा दिखानेवाला कोई नहीं मिला। इसीलिए कहना पड़ता है कि ग्रामदान के सिवाय इसके लिए दूसरा कोई रास्ता नहीं है। आप समग्र दृष्टि से सोचें तो ग्रामदान की बात निश्चय ही आपके ध्यान में आ जायगी। आप ग्रामदान के विचार को गहराई में जाकर समझने की कोशिश कीजिए। ♦♦♦

लखीमपुर २२-५-'५९

जम्मू-कश्मीर राज्य में प्रवेश के बाद

कश्मीर में समस्त उपाधियों से मुक्त होकर सेवा और प्यार के लिए घूमूँगा

[२२ मई को विनोबाजी की चिरप्रतीक्षित कश्मीर-यात्रा आरंभ हो गयी। बुद्ध-जयन्ती के अवसर पर नई तालीम के आचार्य और महान शान्ति-सैनिक के रूप में विनोबाजी ने कश्मीर की धरती को प्रणाम किया। उस राज्य के मुख्य मंत्री श्री बख्शी गुलाम महम्मद ने सीमा पर विनोबाजी को अभिवादन किया। पड़ाव पर पहुँचने के बाद श्री बख्शी साहब ने स्वागत-भाषण किया। स्वागत का उत्तर देते हुए विनोबाजी ने गद्‌गद् स्वरों में अपने हृदय को जनता के सामने प्रकट किया। सं०]

कश्मीर-प्रवेश का आनन्द

आज मुझे कितनी खुशी हो रही है, इसका बयान मैं लफ्जों में नहीं कर सकता। पंढरपुर बंबई राज्य में एक बड़ा मरकज है। वहाँ महाराष्ट्र के लाखों लोग यात्रा के लिए जाते हैं। अखिल भारतीय सर्वोदय-सम्मेलन का दसवाँ अधिवेशन पंढरपुर में ही हुआ था। उस सम्मेलन में हमने जाहिर किया था कि अब हम कश्मीर जाना चाहते हैं। सारे भारत में और दूसरे देशों में भी हमारी कश्मीर-यात्रा की चर्चा होने लगी। हम पंढरपुर से कश्मीर की ओर मुड़े। इस बीच दूसरे प्रान्तों में हमारा जो कार्यक्रम था, उसमें भी काँट-छाँट करनी पड़ी। लेकिन हमें खुशी है कि आज हम इस राज्य में प्रवेश कर रहे हैं।

कश्मीर में भूमि तैयार है

कश्मीर आने से पूर्व यहाँ कुछ अच्छी बातें हो गयी हैं, जो हमारे काम में बहुत ही मदद देनेवाली हैं। एक तो यह की पहले यहाँ बाहर से आनेवालों पर पाबंदियाँ थीं, वे पाबंदियाँ अब हटा दी गयी हैं। दूसरी बात यहाँ जमीन का सीलिंग हो गया है। एक निश्चित मर्यादा से जिनके पास ज्यादा जमीन है, वह जमीन उनसे ली जा रही है, गरीबों में बाँटी जा रही है और बाँटी गयी है। हमारे आने से पहले ऐसा काम होना एक बहुत बड़ी बात है।

कल पठानकोट में कुछ मुसलमान भाई मिले थे। उन्होंने हमें एक ऐसी चीज भेंट दी, जिससे बेहतरीन चीज दूसरी कोई नहीं हो सकती। वह क्या है, यह पूछकर मैं आपका इम्तहान नहीं लूँगा। उन्होंने एक खूबसूरत कुरान की प्रति मुझे भेंट दी। वह परदेश में छपी हुई है। उसके एक बाजू में मूल है और दूसरी बाजू में है अंग्रेजी तर्जुमा। हम समझते हैं कि कश्मीर-प्रवेश के लिए अल्लाह का शानदार आशीर्वाद हमें हासिल हो गया है।

रियासत का दान

अभी हमारे बख्शी जी ने जाहिर किया है कि हमारी इस कुल रियासत का भी दान दिया जा सकता है। यह हो सकता है और ऐसा होना ही चाहिए। बख्शी जी ने जो जाहिर किया, वह केवल एक शब्द नहीं है, बल्कि उसके पीछे एक बहुत बड़ा भाव है। मुझे विश्वास है कि परमेश्वर का आशीर्वाद इस तरह से हमें प्राप्त हो रहा है।

उधर लोग बोल रहे हैं 'जय जगत्।' अब बच्चे-बच्चे की जबान से यही मंत्र निकलनेवाला है। इस मंत्र में बहुत बड़ी ताकत है। छोटी-छोटी दिवारों को तोड़कर व्यापक भावना, ऊँचे खयालात और विशाल दिल के लिए यह मंत्र बहुत बड़ी प्रेरणा देनेवाला है।

अभी यहाँ तीन-चार भाइयों ने हमें भूदान-पत्र दिया है। इससे कार्य का आरम्भ हो गया है। लोगों की हमारे प्रति जो श्रद्धा है, वह इस रूप में अभिव्यक्त हुई है।

ये तीन पवित्र कार्य

मैं आपके यहाँ अपनी ओर से कुछ भी नहीं करना चाहता हूँ। भगवान जो चाहेगा, वही मैं करूँगा। मुझे पूरा यकीन है कि वह जो चाहेगा, वही होगा। कुरान शरीफ में कहा गया है कि वह केवल 'इस्मूल यकीन' नहीं, बल्कि 'अयनूल यकीन' भी है। मैंने अनुभव करके देखा है कि उसी की इच्छा से सारा काम चलता है। मैंने उसी पर भरोसा रखा है। इसलिए आज तक मेरे द्वारा ऐसी कोई चीज नहीं हुई, जो मेरे लिए और मेरे

देश के लिए मुफीद न हो। भगवान ने चाहा तो यहाँ भी उसकी मंशा के अनुरूप तीन काम करना चाहता हूँ।

१—मैं देखना चाहता हूँ।

२—मैं सुनना चाहता हूँ।

३—मैं प्यार करना चाहता हूँ।

भगवान ने जितना प्यार करने की ताकत मुझे दी है, वह सब मैं यहाँ पर इस्तेमाल करना चाहता हूँ। यदि इसमें मेरी सारी ताकत खत्म हो जाय तो मैं भगवान से और माँगूँगा। मैं यहाँ ज्यादा नहीं बोलूँगा। मेरा भरोसा बोलने पर नहीं है। इसलिए यदि लाचारी से मुझे बोलना पड़े तो केवल प्यार करने के लिए बोलूँगा।

अल्लाह चाहता है

जो काम मैं कर रहा हूँ, वह मैंने नहीं उठाया है। वह तो मुझ पर लादा गया है। आठ साल पहले की बात है। मैं तेलंगाना के एक गाँव में गया था। वहाँ के हरिजनों ने मुझसे जमीन की माँग की थी। मैं सोचने लगा कि इन्हें जमीन कहाँ से ला दूँ। क्या सरकार से माँगूँ? फिर सोचा इस प्रकार की माँग हर गाँव से आ सकती है तो क्या लोगों की माँग लोगों के लिए, लोगों के जरिये पूरी नहीं की जा सकती? मैंने अपनी प्रार्थना-सभा में उपस्थित लोगों से पूछा। एक भाई ने खड़े होकर हमें सौ एकड़ जमीन दे दी। माँगी थी अस्सी एकड़, मिली सौ एकड़। मैंने उसे भगवान का इशारा समझा और फिर उसी दिन से इस जमीन की समस्या के समाधान के लिए निकल पड़ा। आज तक घूम रहा हूँ। क्या इस तरह बुढ़ापे में लगातार घूमने की ताकत, जिस्मानी ताकत हममें हो सकती है? मैं कहना चाहता हूँ कि मेरे में न पूरी जिस्मानी ताकत है और न रूहानी ताकत। जो कुछ ताकत है, वह 'उसी' की है। वही हमारे अंदर बैठकर हमें घुमा रहा है। मैं घूम रहा हूँ। इतने वर्षों तक घूमने के बाद भी मैं बिलकुल थका नहीं हूँ। इसका और कोई कारण नहीं है, सिवाय इसके कि अल्लाह चाहता है।

सबके लिए एक जैसी गुंजाइश

बख्शी साहब ने कहा कि मुझसे मिलने के लिए हर किसी पार्टी का हर कोई सदस्य आ सकता है। किसी पर किसी प्रकार की बंदी नहीं रहेगी। सिर्फ समय की पाबंदी रहेगी। बख्शी साहब ने राज्य की ओर से यह बात कही है और मैं अपने दिल की ओर से कहना चाहता हूँ कि मेरे दिल में सबके लिए गुंजाइश है। सभी कोई आकर मुझसे मिल सकते हैं। "सभी संगी बनि आयी" मैं सबका हूँ। मेरी सबके साथ बनती है। यद्यपि यहाँ-वालों को पंजाब और पाकिस्तान के कारण बहुत ज्यादा तकलीफ भुगतनी पड़ी, फिर भी यहाँ गुरुओं का यह भजन चलता है कि "ना कोई बैरी नाहि बिगाना"। हमारे लिए कोई दुश्मन नहीं है, कोई परकीय नहीं है। सभी हमारे दोस्त हैं। मैं सबके साथ समान प्रेम करता हूँ। किसी पर कम, किसी पर ज्यादा करूँ, ऐसा मेरे दिल में नहीं है।

मैं मुहम्मद साहब का जीवन-चरित्र पढ़ रहा था। उसमें एक बात आयी है। अबूबकर के बारे में मुहम्मद साहब कहते हैं कि अगर एक शख्स से दूसरे शख्स पर ज्यादा प्यार करना मना न हो तो उस पर मैं सबसे ज्यादा प्यार कर सकता हूँ। याने खुदा की तरफ से एक शख्स से दूसरे शख्स पर ज्यादा प्यार करना मना है। वही हाल मेरे दिल का है। मैं भी एक शख्स पर किसी दूसरे शख्स से ज्यादा प्यार नहीं कर सकता। कभी किसी पर प्यार करने में फर्क नहीं कर सकता।

मैं कुछ भी जाने बिना केवल दुःख दूर करना चाहता हूँ

मैंने लूई पाश्चर की एक तस्वीर देखी। उसके नीचे फ्रेंच, अंग्रेजी और हिंदी में एक वाक्य लिखा हुआ था :—

"मैं तुम्हारा धर्म क्या है, यह नहीं जानना चाहता।
मैं तुम्हारे खयालात कैसे हैं, यह भी नहीं देखना चाहता।
मैं तुम्हारे दुःख दूर करना चाहता हूँ।"

इंसान का दुःख दूर करनेवाले इन्सान इन्सान का फर्ज अदा करते हैं। इस वचन का मुझ पर बहुत असर हुआ। इसी के अनुसार वर्तन करने की मेरी कोशिश है।

◆◆◆

स्वागत-समारोह में — महलपुर (पंजाब) १०-५-'५९

भेद की दिवालों को तोड़कर दिलों को जोड़नेवाला सर्वोदय-मंडल

पंजाब की दो विशेषताएँ हैं। पहले में, यह आध्यात्मिक विकास का एक प्रधान स्थान रह चुका है। यहाँ के लोग अनुभवी हैं। यह अनेक जमातों का एकत्र होने का स्थान था, इसलिए यहाँ एक तमदुन मिली-जुली सभ्यता चल पड़ी। दूसरी इसकी विशेषता यह है कि इस प्रान्त पर जो सितम गुजरा है तथा इसने जितनी तकलीफें उठाई हैं, उतनी शायद दूसरे किसी सूबे को न उठानी पड़ी होंगी।

सर्वोदय एक वृक्ष है और रचनात्मक कार्य शाखाएँ

इन चीजों को मद्देनजर रखते हुए हमें इस प्रान्त के लिए सोचने का एक अलग ढंग अपनाना होगा। यहाँ के लोगों में एकता तथा परस्पर प्रेमभाव लाने का एक ही तरीका हो सकता है और वह है—सर्वोदय। इसके लिए हमें सर्वोदय की तरफ भी जरा व्यापक नजर से देखना होगा। सर्वोदय का कुल जीवन-विचार लोगों के सामने लाना होगा।

यहाँ के लोग खादी, ग्रामोद्योग, नयी तालीम, कस्तूरबा, भूदान, ग्रामदान आदि भिन्न-भिन्न कामों में लगे हैं। हमें सर्वोदय का काम भी उठाना होगा। लोगों के दिल में यह बात जमानी होगी कि 'सर्वोदय' एक वृक्ष है और भूदान, खादी आदि कार्य उसकी शाखाएँ मात्र हैं। सब शाखाओं की जड़ में यह विचार है कि दूसरों की भलाई में अपना भला है। इन सब शाखाओं की ताकत एक करने से यहाँ एक ऐसी चीज बन जायगी, जिसकी छाया में सभी ठंढक पायेंगे और उसकी छाया में आना पसंद करेंगे। इसी कार्य को करने के लिए हमने मुख्तलिफ लोगों का एक सर्वोदय-मंडल बनाया है। यह मंडल सर्वोदय पर लोगों की श्रद्धा जमाने का काम करेगा।

मालकियत को मिटा देना है

पंजाब के हरएक परिवार का हरएक मनुष्य हमसे परिचित हो, यह काम अब करना है। प्रत्येक के नाम का हमें पता हो, हरएक के सुख-दुःख की जानकारी हो। हरएक के गुणों का परिचय हो। इस कार्य को करने के लिए पहला उपाय है हर घर में सर्वोदय-पात्र की स्थापना। सर्वोदय-पात्र का काम बच्चे

बहुत आसानी से कर सकते हैं। क्योंकि वे चाहें जब, चाहे जिस घर में प्रवेश पा सकते हैं। उसके बाद लोक-संपर्क स्थापित करनेवाली सेना खड़ी करनी होगी। ये दोनों काम परस्परापेक्षी हैं। सर्वोदय-पात्र बनते हैं तो सेना खड़ी होती है और सेना खड़ी होती है तो सर्वोदय-पात्र बनते हैं। इसके लिए सर्वोदय-मंडल को हर कौम, हर मजहब का सहयोग प्राप्त करने का काम करना होगा। हमारे कार्यकर्ता में और कोई गुण हों या न हों, उसे सबका प्रेम-सम्पादन करने का काम अवश्य करना होगा। ऐसा होने से उसे हर घर में सहज प्रवेश मिल सकता है। इस प्रकार उसे जो 'पत्रं पुष्पं फलं तोयम्' मिले, उसे प्रेमपूर्वक ले ले। उसे इस पर किसी प्रकार की आपत्ति नहीं करनी चाहिए। हाँ, वह फिर दुबारा माँग सकता है। माँगने का तो हमारा हक है ही। अगर हम प्रेमपूर्वक माँगें तो इतना मिलेगा कि लेनेवाले (हमारे) के हाथ थक जायेंगे। देनेवाला तो देता ही चला जायगा। मगर हाँ, कम लेने का मतलब यह नहीं कि ५० एकड़-वाला १ एकड़ दे तो ले लें, उससे छठा हिस्सा ही लेना है। क्योंकि वह हमारा क्रान्ति-विचार है। हमारी यह क्रान्ति केवल भूमि तक ही नहीं है। हम मालकियत मिटाना चाहते हैं। अन्य कामों में तो जिससे जितनी जो भी इमदाद मिले, वह प्रेम-पूर्वक ले लेनी है।

दिल जोड़ना है

इस प्रकार सर्वोदय की नींव पक्की करने के बाद खादी, ग्रामोद्योग, नयी तालीम आदि कामों को आगे बढ़ाना है। किन्तु यह सारा काम अकेले सर्वोदय-मंडल के करने का नहीं है। वह तो केवल प्रेरणा देगा। काम सबको मिलकर करना होगा। मिल-जुल कर काम करने से 'इक दूजी भी लख होए, लख होए लख बीस।' हमें लाखों जीभों से भगवान का नाम जपना है। असंख्य जप असंख्य भाव। अगर सर्वोदय-मंडल के दस-पाँच इने-गिने लोग ही काम करते रहेंगे, जप करते रहेंगे तो मन्दिरों जैसी हालत हो जायगी। मन्दिर में पुजारी पूजा करता है; मगर हम चाहते हैं कि घर-घर में पूजा हो, जप हो।

सर्वोदय-मंडल सबके सहयोग से कार्य कर सकेगा। पहले पंजाब में 'जात-पात-तोड़क मंडल' हुआ करते थे। उसी तरह इस मंडल का नाम 'दिल-जोड़क मंडल' रखा गया है। इसका काम है सबके दिलों को जोड़ना और सबकी प्रेरणा देकर उनके हजारों हाथों से काम करवाना।

पंजाब में ५० दिन तक यात्रा करने के बाद मैं कश्मीर जाऊँगा। ३॥ महिने बाद फिर से मेरा यहाँ आना होगा, उस समय आपने क्या किया है, यह देखा जायगा। आपकी उस समय परीक्षा होनेवाली है। मुझे आशा है कि आप उस परीक्षा में सफल होंगे। पंजाब कभी फेल नहीं हो सकता, आप इस धारणा को गलत सिद्ध नहीं होने देंगे, ऐसा मुझे विश्वास है।

♦♦♦

सर के० जे० मेहता टी० बी० अस्पताल के रोगियों के बीच

अमरगढ़ (गुजरात) ११-११-'५८

रोग को योग में बदलिये

मनुष्य योग का आचरण करे तो कभी रोग नहीं हो सकता। हम गलतियाँ करते हैं। जीवन में स्थिरता नहीं आती। मन चंचल रहता है। इंद्रियाँ काबू में नहीं रहतीं, इसी से योग सधता नहीं। हम भोग में पड़ते हैं तो रोग हमें आ दबोचता है। अगर हम जरा सी सावधानी बरतें, जीवन को संयमित, संतुलित और व्यवस्थित बनाएँ तो रोग को योग में परिवर्तित कर सकते हैं। क्षयरोगी भी योगी बन सकता है। रोग तो मिटता है, साथ-साथ रोगी का भी कल्याण हो जाता है। इसलिए जीवन-कला साधने की कोशिश करनी चाहिए।

एक उदाहरण

मेरे छोटे भाई हैं—बालकोबा। वे खूब काम करते थे। शक्ति का अतिरेक होने से उन्हें क्षयरोग हो गया। वे दस वर्ष से भी ज्यादा समय तक क्षयरोग-ग्रस्त रहे। फिर भी उनका सारा कार्यक्रम योगी की तरह चलता रहा। परिणामस्वरूप वे एकदम ठीक हो गये। अब वे हाथों में कुदाल लेकर खुदाई का काम करते हैं। गाँवों में सफाई का काम करते हैं और निसर्गोपचार केन्द्र चलाते हैं। बहुत से लोग उनके प्राकृतिक चिकित्सालय में जाकर और दुरुस्त होकर लौटते हैं। बालकोबा मुझसे ५ साल छोटे हैं। मेरी उम्र इस समय लगभग ६३ साल की है और वे हैं ५८ वर्ष के। आज भी वे लोगों की सेवा में लगे हैं। रोग से मुक्त होकर योग की ओर अग्रसर होनेवाले बालकोबा जीवन को सफल कर रहे हैं।

मैं चाहता हूँ कि आप भी जीवन की कला समझें, अपने आप को व्यवस्थित बनाएँ और रोग को योग में परिवर्तित करने की क्षमता प्राप्त करें। मेरी भगवान से प्रार्थना है कि आपको वह अपना जीवन परिवर्तन करने की क्षमता प्रदान करे।

♦♦♦

अनुक्रम

१. दोस्ती और दुश्मनी, प्रेम और शस्त्र...
मुकेरिया १६ मई '५९ पृष्ठ ४५३

२. लोकशाही को नये रूप में भारत में....
जसूहा १५ मई '५९ „ ४५४

३. लोकशक्ति का निर्माण करने से ही....
मालपरा १३ नवंबर '५८ „ ४५६

४. कश्मीर में समस्त उपाधियों से मुक्त....
लखीमपुर २२ मई '५९ „ ४५८

५. भेद की दिवालों को तोड़कर दिलों को....
महलपुर १० मई '५९ ४५९

६. रोग को योग में बदलिये
अमरगढ़ ११ नवंबर '५८ ४६०

♦♦♦

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।